SAMSKRITA SIKSHA

PART - I

विषय-सूची

अभ्यास	शब्द	धातु	कारक	प्रत्ययादि	पृष्ठ
१	—	लट् प्र० पु०	—	—	६
२	—	लट् म० पु०	—	—	८
३	—	लट् उ० पु०	—	—	१०
४	—	कृ, अस्, लट्	—	—	१२
५	राम	भू-लट्	प्रथमा	—	१४
६	गृह	भू-लोट्	द्वितीया	—	१६
७	रमा	भू-लङ्	,,	—	१८
८	हरि	भू-विधिलिङ्	तृतीया	—	२०
९	गुरु	भू-लृट्	,,	—	२२
१०	नदी	हस्	चतुर्थी	—	२४
११	युष्मद्	पठ्	,,	—	२६
१२	अस्मद्	लिख्	पंचमी	—	२८
१३	तत्	गम्	,,	—	३०
१४	इदम्	दृश्	षष्ठी	—	३२
१५	—	पा	,,	—	३४
१६	—	क्रीड्	सप्तमी	तुम्	३६
१७	—	खाद्	,,	तव्य	३८
१८	—	वद्	,,	शतृ	४०
१९	—	कृ	दीर्घ सन्धि	क्त	४२
२०	—	अस्	गुण सन्धि	क्त्वा	४४

परिशिष्ट

(क) शब्दरूप-संग्रह ४६

(ख) धातुरूप-संग्रह ४८

'संस्कृत-शिक्षा' की विशेषताएँ

१. इसमें भाषा-शिक्षण की नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति अपनायी गयी है तथा अत्यन्त सरल और रोचक ढंग से संस्कृत की शिक्षा दी गयी है ।

२. 'संस्कृत-शिक्षा' ५ भागों में पूर्ण हुई है । यह कक्षा ६ से १० तक के छात्रों के लिए विशेष उपयोगी है । प्रत्येक कक्षा के लिए एक-एक भाग है ।

३. प्रत्येक भाग में प्रयत्न किया गया है कि उस स्तर से संबद्ध व्याकरण का अंश उस भाग में विशेष रूप से सिखाया जाय ।

४. अभ्यासों के द्वारा व्याकरण की शिक्षा दी गयी है ।

५. प्रारम्भिक छात्रों के लिए उपयोगी सभी बातें इसमें दी गयी हैं ।

६. प्रत्येक अभ्यास के लिए केवल दो पृष्ठ दिये गये हैं ।

७. प्रत्येक अभ्यास में व्याकरण के एक या दो नियमों का अभ्यास कराया गया है । साथ ही आवश्यक शब्दावली भी दी गयी है ।

८. उदाहरण–वाक्यों के द्वारा व्याकरण के नियमों को स्पष्ट किया गया है । उनसे मिलते-जुलते हुए ही वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कराया गया है ।

९. प्रत्येक अभ्यास में कुछ विशेष शब्दों, धातुओं या प्रत्ययों आदि का अभ्यास कराया गया है ।

१०. परिशिष्ट में आवश्यक शब्दों और धातुओं के रूप दिये गये हैं ।

कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

आवश्यक निर्देश

१. संस्कृत में ३ लिंग (Genders) होते हैं । उनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं:—

१. पुंलिंग (पुं०) (Masculine Gender), २. स्त्रीलिंग (स्त्री०) (Feminine Gender), ३. नपुंसकलिंग (नपुं०) (Neuter Gender) ।

२. संस्कृत में ३ वचन (Numbers) होते हैं । उनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं:—

१. एकवचन (एक०) (Singular), २. द्विवचन (द्वि० या द्वि० व०) (Dual), ३. बहुवचन (बहु०) (Plural) ।

३. संस्कृत में ३ पुरुष (Persons) होते हैं । उनके नाम और संक्षिप्त रूप ये हैं:—

१. प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष (प्र० पु० या प्र०) (Third Person), २. मध्यम पुरुष (म० पु० या म०) (Second Person), ३. उत्तम पुरुष (उ० पु० या उ०) (First Person)।

४. संस्कृत में अधिक प्रयुक्त लकार (Tenses & Moods) ५ हैं । उनके नाम तथा अर्थ ये हैं:—१. लट् (वर्तमान काल) (Present Tense), २. लोट् (आज्ञा अर्थ) (Imperative Mood), ३. लङ् (भूतकाल) (Imperfect Tense), ४. विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ) (Potential Mood), ५. लृट् (भविष्यत् काल) (Future Tense) ।

५. संस्कृत में ८ विभक्तियाँ (कारक) होती हैं । उनके नाम, संक्षिप्त रूप और चिह्न ये हैं:—

	विभक्ति	सं० रूप	कारक	चिह्न	Case
१.	प्रथमा	(प्र०)	कर्ता	—, ने	Nominative
२.	द्वितीया	(द्वि०)	कर्म	को	Accusative
३.	तृतीया	(तृ०)	करण	ने, से, द्वारा	Instrumental
४.	चतुर्थी	(च०)	संप्रदान	के लिए	Dative
५.	पंचमी	(पं०)	अपादान	से	Ablative
६.	षष्ठी	(ष०)	संबन्ध	का, के, की	Genitive
७.	सप्तमी	(स०)	अधिकरण	में, पर	Locative
८.	संबोधन	(सं०)	संबोधन	हे, अये, भोः	Vocative

अभ्यास १

शब्दावली—सः—वह, he, तौ—वे दोनों, those two, ते—वे सब, they, भू—होना, to be, पठ्—पढ़ना, to read, लिख्—लिखना, to write, हस्—हँसना, to laugh, गम् (गच्छ्)—जाना, to go, अत्र—यहाँ, here, तत्र—वहाँ, there, यत्र—जहाँ, where, कुत्र—कहाँ, where, किम्—क्या, what.

नियम १—कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है । जैसे—सः पठति । कर्ता प्रथम पुरुष एक० है, अतः क्रिया भी प्र० पु० एक० है ।

नियम २—वर्तमान काल (लट्) प्रथम पुरुष में धातु के अन्त में ये संक्षिप्त रूप लगते हैं—एकवचन में अति, द्विवचन मे अतः, बहुवचन में अन्ति । जैसे—पठ् के पठति, पठतः, पठन्ति । भू के भवति, भवतः, भवन्ति । गम् >गच्छ् गच्छति, गच्छतः, गच्छन्ति ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

सः पठति । तौ पठतः। ते पठन्ति । सः लिखति । तौ लिखतः । ते लिखन्ति । सः गच्छति । तौ कुत्र गच्छतः ? ते तत्र गच्छन्ति । सः अत्र हसति । तत्र किं भवति ?

हिन्दी में अर्थ लिखो :—

सः लिखति .... । तौ लिखतः ....

ते लिखन्ति .... । सः पठति ....

ते पठन्ति .... । सः किं पठति ? ....

सः गच्छति .... । ते तत्र गच्छन्ति ....

तत्र किं भवति ? .... । सः हसति ....

तौ हसतः .... । ते हसन्ति ....

(क) संस्कृत बनाओ :—

वह क्या पढ़ता है ? ....

वे दोनों कहाँ पढ़ते हैं ? ....

वे सब यहाँ पढ़ते हैं ....

वह हँसता है ....

वे सब हँसते हैं ....

वह क्या लिखता है ? ....

वे दोनों लिखते हैं ....

वे सब लिखते हैं ....

वह कहाँ जाता है ? ....

वे सब कहाँ जाते हैं ? ....

वहाँ क्या हो रहा है ? ....

(ख) रिक्त स्थानों को भरो :—

.... पठति । .... लिखति ।

सः .... गच्छति । ते .... गच्छन्ति ।

.... किं पठन्ति ? .... हसन्ति ।

(ग) रिक्त स्थानों में दी हुई धातु का लट् का रूप भरो :—

ते .... (पठ्) । तौ .... (गम्) ।

ते .... (लिख्) सः .... (हस्) ।

ते .... (हस्) । ते .... (भू) ।

दिनाङ्क: .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २

शब्दावली—त्वम्—तू, thou, युवाम्—तुम दोनो, you, you two, यूयम्—तुम सब, you, you all, वद्—बोलना, to speak, क्रीड्—खेलना, to play, खाद्—खाना, to eat, अद्य—आज, today, इदानीम्—अब, now, यदा—जब, when, तदा—तब, then, कदा—कब, when, अपि—भी, also, न—नहीं, no, एव—ही, alone.

नियम ३—कर्ता में प्रथमा होती है और कर्म में द्वितीया। जैसे—राम पुस्तक पढ़ता है—रामः पुस्तकं पठति। त्वं गृहं गच्छसि।

नियम ४—वर्तमानकाल (लट्) मध्यम पुरुष में धातु के अन्त मे ये संक्षिप्त रूप लगते हैं:—एकवचन मे असि, द्विवचन मे अथः, बहुवचन मे अथ; जैसे—पठ् के पठसि, पठथः, पठथ। भू के भवसि, भवथः, भवथ। गम्>गच्छसि, गच्छथः, गच्छथ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

त्वं वदसि। यूयं वदथ। त्वं क्रीडसि। यूयम् अपि क्रीडथ। त्वम् इदानीं भोजनं खादसि। यूयम् इदानीं भोजनं किं न खादथ? यदा रामः पठति, तदा त्वम् अपि पठसि।

हिन्दी में अर्थ लिखो :—

त्वं किं वदसि ?...

यूयम् इदानीं न क्रीडथ...

त्वं कदा भोजनं खादसि?...

त्वं पुस्तकं पठसि...

यूयं गृहं गच्छथ...

युवाम् इदानीं लिखथः...

(क) संस्कृत बनाओ :—

तू पुस्तक पढ़ता है ....

तुम दोनों लिखते हो ....

तुम सब घर जाते हो ....

तू क्या कहता है ? ....

तुम सब अब खेलते हो ....

तुम दोनों क्यों नहीं खेलते हो ? ....

तू भी घर जाता है ....

तुम सब भोजन खाते हो ....

तुम दोनों कब खेलते हो ? ....

तुम सब क्या पढ़ते हो ? ....

तू क्यों नहीं बोलता है ? ....

(ख) रिक्त स्थानों को भरो :—

त्वं पुस्तकं .... । यूयं गृहं .... ।

युवाम् .... न क्रीडथः ? यूयं भोजनं .... ।

यदा .... आगच्छति, तदा त्वम् .... ।

(ग) रिक्त स्थानों में दी हुई धातु का लट् का रूप भरो :—

त्वं किं .... (पठ्) । यूयं कुत्र .... (क्रीड्) ।

युवाम् इदानीं .... (लिख्) । यूयं गृहं .... (गम्) ।

त्वं किं .... (वद्) । यूयं किं न .... (हस्) ।

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ३

शब्दावली—अहम्—मैं, I, आवाम्,—हम दोनों, we, we two, वयम्—हम सब, we, we all, आगम् (आगच्छ)—आना, to come, दृश्—देखना, to see, स्था—रुकना, to stay, पा—पीना, to drink, घ्रा—सूँघना, to smell, इतः—यहाँ से, from here, ततः—वहाँ से, from there, यतः—जहाँ से, from where, कुतः—कहाँ से, from where, इत्थम्—ऐसे, thus, तथा— वैसे, so, यथा—जैसे, as, कथम्—कैसे, how, च—और, and.

नियम ५—हिन्दी में जहां 'और' लगता है, संस्कृत में 'च' उससे एक शब्द के बाद में लगेगा । जैसे—फल और फूल—फलं पुष्पं च । राम और कृष्ण—रामः कृष्णः च ।

नियम ६—वर्तमान काल (लट्) उत्तम पुरुष में धातु के अन्त में ये संक्षिप्त रूप लगते हैं:—एक० में आमि, द्वि० मे आवः, बहु० में आमः । जैसे—पठ् के पठामि, पठावः, पठामः।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

अहं पुस्तकं पठामि । वयं लेखं लिखामः। वयं ततः आगच्छामः। अहं फलं पश्यामि । अहम् अत्र तिष्ठामि । वयं जलं पिबामः । अहं पुष्पं जिघ्रामि । त्वं कुतः आगच्छसि ? अहं ततः आगच्छामि । त्वं कथं पठसि ? अहं इत्थं पठामि ।

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इन धातुओं के ये रूप हो जाते हैं:—गम् का गच्छ्, गच्छति । आगम्—आगच्छ्, आगच्छति । दृश्—पश्य्, पश्यति । स्था—तिष्ठ्, तिष्ठति । पा—पिब्, पिबति । घ्रा—जिघ्र्, जिघ्रति ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

मैं अब पुस्तक पढ़ता हूँ ....

हम दोनों पुस्तक पढ़ते हैं ....

हम सब पुस्तकें पढ़ते हैं ....

मैं लेख लिखता हूँ ....

मैं विद्यालय से आता हूँ ....

हम दोनों वहाँ से आते हैं ....

हम फूल को देखते हैं ....

मैं वहाँ रुकता हूँ ....

मैं जल पीता हूँ ....

हम फूल सूँघते हैं ....

वह वहाँ से आता है ....

तुम सब कहाँ से आते हो? ....

मैं फल और फूल देखता हूँ ....

तुम सब कैसे पढ़ते हो? ....

मैं जैसे पढ़ता हूँ, वैसे लिखता हूँ ....

(ख) रिक्त स्थानों को भरो :—

त्वं .... पठसि ?   अहं पुस्तकं .... ।

यूयं किं .... ?   वयं .... लिखामः ।

(ग) रिक्त स्थानों में दी हुई धातु का लट् का रूप भरोः—

युवां कुत्र .... (गम्) ?   आवां गृहं .... (गम्) ।

यूयं किं .... (खाद्) ?   वयं भोजनं .... (खाद्) ।

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ४

शब्दावली—कृ—करना, to do, अस्—होना, to be, एक—एक, one, द्वौ—दो, two, त्रय—तीन, three, चत्वार:—चार, four, पञ्च—पाँच, five, षट्—छः, six, सप्त—सात, seven, अष्ट—आठ, eight, नव—नौ, nine, दश—दस, ten.

कृ (करना) लट्				अस् (होना) लट्		
करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति	प्र० पु०	अस्ति	स्त:	सन्ति
करोषि	कुरुथ:	कुरुथ	म० पु०	असि	स्थ:	स्थ
करोमि	कुर्व:	कुर्म:	उ० पु०	अस्मि	स्व:	स्म:

नियम ७—तीनों लिङ्गों में धातु का रूप वही रहता है। जैसे—बालक: पठति। बालिका पठति। बालक: पतति। बालिका पतति। पत्रं पतति।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

स: कार्यं करोति। ते कार्यं कुर्वन्ति। त्वं किं करोषि? अहं कार्यं करोमि। ते अत्र सन्ति। त्वं कुत्र असि? अहम् अत्र अस्मि। वयं स्म:। अत्र द्वौ बालकौ स्त:। तत्र चत्वार: जना: सन्ति।

हिन्दी में अर्थ लिखो :—

त्वं किं करोषि? ....

अहम् अत्र कार्यं करोमि ....

तत्र चत्वार: बालका: पठन्ति ....

अत्र अष्ट छात्रा: लेखं लिखन्ति ....

अत्र नव बालिका: क्रीडन्ति ....

(क) संस्कृत बनाओ :—

वह क्या करता है ?..

वह काम नहीं करता है ....

वे क्या करते हैं ? ....

वे पुस्तकें पढ़ते हैं..

तुम सब क्या करते हो ?..

मैं लेख लिख रहा हूँ..

वहाँ पर कौन है ?..

मैं यहाँ पर ही हूँ..

वहाँ पर एक बालक है..

यहाँ दो बालक हँस रहे हैं..

वहाँ तीन मनुष्य हैं ....

यहाँ पर दस बालक हैं..

तुम सब कहाँ हो ?..

हम सब यहाँ पर ही हैं..

(ख) रिक्त स्थानों में दी हुई धातु के लट् के रूप भरो:—

सः किं .... (कृ) ?   तौ किं .... (कृ) ।

त्वं किं .... (कृ) ?   अहं पुस्तकं .... (पठ्) ।

तत्र कः .... (अस्) ?   तत्र बालकः .... (अस्) ।

अत्र अहम् .... (अस्) ।   यूयं तत्र .... (अस्) ।

बालकाः पुस्तकानि ..... (पठ्) ।   मनुष्याः गृहं .... (गम्) ।

दिनाङ्कः.. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ५

शब्दावली—रामः—राम, Ram, बालकः—बालक, Boy, मनुष्यः—आदमी, man, नृपः—राजा, king, विद्यालयः—विद्यालय, school, ग्रामः—गाँव, village, जनकः—पिता, father, पुत्रः—पुत्र, son, उपाध्यायः—अध्यापक, teacher, शिष्यः—शिष्य, pupil. पच्—पकाना, to cook, नम्—नमस्कार करना, to salute, रक्ष्—रक्षा करना, to protect.

भू (होना, to be) लट्				संक्षिप्त रूप		
भवति	भवतः	भवन्ति	प्र० पु०	अति	अतः	अन्ति
भवसि	भवथः	भवथ	म० पु०	असि	अथः	अथ
भवामि	भवावः	भवामः	उ० पु०	आमि	आवः	आमः

सूचना—ये संक्षिप्त रूप पठ् आदि धातुओं के अन्त में लट् में लगेंगे । जैसे—पठ्—पठति, पठतः, पठन्ति आदि । लिख्—लिखति, लिखतः, लिखन्ति आदि ।

नियम ८—(प्रथमा) कर्ता (व्यक्तिनाम, वस्तुनाम आदि) में प्रथमा होती है जैसे—रामः पठति । बालकः गच्छति ।

नियम ९—(संबोधन) किसी को संबोधन करने (पुकारने) में संबोधन विभक्ति होती है ! जैसे—हे राम !, हे कृष्ण !, हे देवदत्त !

इन वाक्यों के ध्यान से पढ़ो :—

रामः पुस्तकं पठति । बालकाः क्रीडन्ति । नृपः राज्यं रक्षति । मनुष्यः भोजनं पचति । शिष्याः उपाध्यायं नमन्ति । जनकः ग्रामं गच्छति । पुत्राः हसन्ति । शिष्याः विद्यालयं गच्छन्ति । वयं लेखं लिखामः । अहं सत्यं वदामि ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

बालक पुस्तक पढ़ता है ....

बालक पुस्तकें पढ़ते हैं ....

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ..

हम लेख लिखते हैं..

बालक खेलता है ....

राम राज्य की रक्षा करता है..

वह आदमी भोजन पकाता है..

शिष्य गुरु को नमस्कार करता है ....

पिता पुत्र की रक्षा करता है..

मैं विद्यालय को जाता हूँ..

वे कहाँ जा रहे हैं ?..

वे गाँव को जा रहे हैं ....

अध्यापक शिष्य से कहता है..

हम सत्य बोलते हैं ....

वे बालक हँस रहे हैं..

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो:—

अहं पठति ....। ते गच्छति.......................... ।

वयं वदामि................................। सः क्रीडन्ति.......................... ।

यूयं गच्छथः ....। आवां गच्छामः.......................... ।

त्वं कुर्वन्ति................................। वयं सन्ति.......................... ।

दिनाङ्कः................................ हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य................................

अभ्यास ६

शब्दावली—गृहम्—घर, house, फलम्—फल, fruit, पत्रम्—पत्ता या पत्र, leaf, letter, नगरम्—नगर, city, कार्यम्—काम, work, अभितः—दोनों ओर, on both sides, उभयतः—दोनों ओर, on both sides, सर्वतः—चारों ओर, around, प्रति—ओर, towards, धिक्—धिक्कार, fie, विना—बिना without.

भू—लोट्				संक्षिप्त रूप		
भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र० पु०	अतु	अताम्	अन्तु
भव	भवतम्	भवत	म० पु०	अ	अतम्	अत
भवानि	भवाव	भवाम	उ० पु०	आनि	आव	आम

सूचना—ये संक्षिप्त रूप पठ् आदि धातुओं के अन्त में लोट् में लगेंगे। जैसे—पठ्—पठतु, पठताम्, पठन्तु आदि। लिख्—लिखतु, लिखताम्, लिखन्तु आदि।

नियम १०—(द्वितीया) कर्म कारक में द्वितीया होती है। जैसे—रामः विद्यालयं गच्छति। स पुस्तकं पठति। स प्रश्नं पृच्छति।

नियम ११—अभितः, उभयतः, सर्वतः, प्रति, धिक्, विना के साथ द्वितीया होती है। जैसे—ग्रामम् अभितः (गाँव के दोनों ओर), ग्रामं प्रति (गाँव की ओर), दुर्जनं धिक्, रामं विना।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

रामः गृहं गच्छतु। नगरम् उभयतः वनम् अस्ति। विद्यालयं परितः फलानि पुष्पाणि च सन्ति। विद्यालयं प्रति गच्छ। दुर्जनं धिक्। रामं विना। शिष्याः पत्राणि लिखन्तु। छात्राः कार्यं कुर्वन्ति।

(क) संस्कृत बनाओ :—

तू घर को जा ....

मैं विद्यालय को जाऊँ ....

वे पुस्तकें पढ़ें ....

तुम सब लेख लिखो ....

मैं पत्र लिखूँ ....

वे नगर को जायें ....

तू फल को खा ....

वह क्या काम करता है ? ....

वह पढ़ता है और लिखता है ....

गाँव के दोनों ओर जल है ....

विद्यालय के चारों ओर पेड़ हैं ....

वह विद्यालय की ओर जाता है ....

कुशिष्य को धिक्कार है ....

धर्म के बिना सुख नहीं है ....

गुरु प्रश्न पूछता है ....

(ख) रिक्त स्थानों में लोट् के रूप भरो :—

ते गृहं ....(गम्) ।	वयं पुस्तकानि ....(पठ्) ।
यूयं लेखं ....(लिख्) ।	बालकाः ....(हस्) ।
यूयं ....(क्रीड्) ।	त्वं प्रश्नं ....(प्रच्छ्) ।
अहं भोजनं ....(खाद्) ।	यूयम् अत्र ....(आगम्) ।

दिनाङ्कः.................................. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..................................

अभ्यास ७

शब्दावली—रमा—रमा, Rama, बालिका—लड़की, girl, पाठशाला—विद्यालय, school, लता—लता, creeper, विद्या—विद्या, knowledge, आज्ञा—आज्ञा, order, प्रजा—प्रजा, subjects, दिनम्—दिन, day, वर्षम्—वर्ष, year, क्रोशः—कोस, a distance of about 2 miles.

भू—लङ्				संक्षिप्त रूप		
अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०	अत्	अताम्	अन्
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०	अः	अतम्	अत
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०	अम्	आव	आम

सूचना—धातु से पहले 'अ' लगेगा। ये संक्षिप्त रूप पठ् आदि धातुओं के अन्त में लङ् में लगेंगे। जैसे—अपठत्, अपठताम्, अपठन् आदि। लिख्—अलिखत्, अलिखताम्,अलिखन्।

नियम १२—(द्वितीया) गमन (चलना, जाना) अर्थ की धातुओं के साथ द्वितीया होती है। ग्रामं गच्छति। गृहं गच्छति।

नियम १३—(द्वितीया) समय और मार्ग की दूरी वाचक शब्दों में द्वितीया होती है। दश दिनानि लिखति—दस दिन तक लिखता है। क्रोशं गच्छति—कोस भर जाता है।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

रमा पत्रम् अलिखत्। बालिकाः पाठशालाम् अगच्छन्। नृपः प्रजाः अरक्षत्। अहं लताम् अपश्यम्। वयं विद्याम् अपठाम। रामः दश दिनानि पठति। कृष्णः क्रोशं गच्छति। अहं जनकस्य आज्ञाम् अपालयम्। कृष्णः पञ्च वर्षाणि अपठत्।

(क) संस्कृत बनाओ :—

रमा ने पुस्तक पढ़ी ....

बालिका ने लेख लिखा ....

सुशीला पाठशाला गयी ....

तूने बालिका देखी ....

उन्होंने लता देखी ....

बालिकाओं ने विद्या पढ़ी ....

राम ने पाँच साल पढ़ा ....

मैंने गुरु की आज्ञा का पालन किया ....

देवदत्त कोस भर गया ....

वे गाँव को गये ....

उसने दस दिन लेख लिखा ....

कृष्ण ने प्रजा की रक्षा की ....

बालिका ने भोजन खाया ....

बालिकाएँ खेलीं ....

रमा ने प्रश्न पूछा ....

(ख) कोष्ठ में दिये शब्दों में से उचित शब्द को चुनकर भरो :—

छात्राः विद्यालयम् .... । (अगच्छन्, अपठन्, अलिखन्)

बालिकाः भोजनम् .... । (अखादत्, अखादन्, अखादम्)

अहं बालिकाम् .... । (अपश्यत्, अपश्यम्, अपश्यः)

वयं पुस्तकानि .... । (अपठन्, अपठाम, अपठम्)

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ८

शब्दावली—हरिः—विष्णु, Vishnu, मुनिः—मुनि, sage, कविः—कवि, poet, रविः—सूर्य, sun, अग्निः—आग, fire, गिरिः—पहाड़, mountain, भूपतिः—राजा, king, कन्दुकम्—गेंद, ball, दण्डः—डंडा, stick, सैनिकः—सिपाही, soldier, सह—साथ, with, प्रच्छ्—पूछना, to ask.

भू—विधिलिङ्				**संक्षिप्त रूप**		
भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०	एः	एतम्	एत
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०	एयम्	एव	एम

सूचना—ये संक्षिप्त रूप पठ् आदि धातुओं के बाद विधिलिङ् में लगेंगे । जैसे—पठ्—पठेत्, पठेताम्, पठेयुः आदि । लिख्—लिखेत्, लिखेताम्, लिखेयुः आदि ।

नियम १४—(तृतीया) करण कारक में तृतीया होती है और कर्मवाच्य में कर्ता में । जैसे—कन्दुकेन क्रीडति । दण्डेन गच्छति । रामेण पुस्तकं पठितम् ।

नियम १५—(तृतीया) सह के साथ तृतीया होती है । जैसे—जनकेन सह गृहं गच्छति—पिता के साथ घर जाता है ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो:—

रामः कन्दुकेन क्रीडेत् । मुनिः दण्डेन गच्छेत् । कविः श्लोकं गायेत् (गावे) । हरिः पठेत् । रविः आकाशे तपेत् (तपे) । अग्निः ज्वलेत् (जले) । भूपतिः दण्डेन दुर्जनं ताडयेत् (मारे) । सः गिरिं गच्छेत् । जनकेन सह पुत्रः आगच्छेत् । शिष्यः प्रश्नं पृच्छेत् ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

हरि गेंद से खेले ....

मुनि डंडे से चले ....

कवि श्लोक लिखे ....

हरि विद्या पढ़े ....

सूर्य अब आकाश में तपे ....

आग पहाड़ पर जले ....

बालक डंडे से गेंद मारे ....

सैनिक डंडे से दुष्ट को मारे ....

हरि पिता के साथ घर जावे ....

कृष्ण पहाड़ पर जावे ....

राम प्रश्न पूछे ....

राजा प्रजा की रक्षा करे ....

बालक सत्य बोलें ....

तुम असत्य न बोलो ....

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर दो :—

त्वं किं करोषि ? ....

त्वं किं पठसि ? ....

ते कुत्र अगच्छन् ? ....

यूयं किं कुरुथ ? ....

हरिः केन अक्रीडत् ? ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास ६

शब्दावली—गुरुः, teacher, साधुः—सज्जन, a gentleman, शिशुः —बच्चा, infant, भानुः—सूर्य, sun, पशुः—पशु, animal, वायुः—हवा, wind, तरुः—वृक्ष, tree, किं कार्यम्, कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्—तीनों का अर्थ है—क्या लाभ, what is the use of, प्रकृतिः—स्वभाव, nature.

भू—लृट्				संक्षिप्त रूप		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु०	इष्यति	इष्यतः	इष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु०	इष्यसि	इष्यथः	इष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु०	इष्यामि	इष्यावः	इष्यामः

सूचना—कुछ धातुओं के अन्त में स्यति, स्यतः, स्यन्ति आदि बिना इ वाले संक्षिप्त रूप लगते हैं । पठ् आदि धातुओं के अन्त में लृट् में ये सं० रूप लगते हैं । जैसे—पठिष्यति, पठिष्यतः, पठिष्यन्ति आदि । दृश्—द्रक्ष्यति, द्रक्ष्यतः, द्रक्ष्यन्ति आदि ।

नियम १६—(तृतीया) किं कार्यम्, कोऽर्थः, किं प्रयोजनम् के साथ तृतीया होती है । मूर्खेण पुत्रेण किं कार्यम्, कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्—मूर्ख पुत्र से क्या लाभ ?

नियम १७—(तृतीया) प्रकृति आदि क्रियाविशेषण शब्दों में तृतीया होती है । प्रकृत्या साधुः । सुखेन जीवति । दुःखेन जीवति ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

गुरुः विद्यालयम् आगमिष्यति । शिशुः क्रीडिष्यति हसिष्यति च । सः प्रकृत्या साधुः अस्ति । दुर्जनेन शिष्येण किं कार्यम् ? शिशुः भानुं तरुं च द्रक्ष्यति (देखेगा) । पशुः धाविष्यति (दौड़ेगा) । वायुः चलिष्यति (चलेगी) ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

बालक घर जायेगा ....

गुरु विद्यालय में आयेंगे ....

छात्र विद्या पढ़ेंगे ....

बालिकाएँ लेख लिखेंगी ....

शिशु गेंद से खेलेगा ....

शिशु सूर्य को देखेगा ....

सज्जन हँसेगा ....

हवा चलेगी ....

मूर्ख शिष्य से क्या लाभ ? ....

देवदत्त स्वभाव से सज्जन है ....

राम सुख से जीता है ....

दुर्जन दुःख से जीता है ....

छात्र वृक्ष को देखेंगे ....

मैं घर जाऊँगा, तू भी चल ....

बालक दौड़ेंगे ....

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो :—

सः पठिष्यन्ति .... ।

त्वं गमिष्यामि .... ।

यूयं धाविष्यसि .... ।

शिशुः क्रीडिष्यन्ति .... ।

ते लेखिष्यति .... ।

अहं द्रक्ष्यति .... ।

ते हसिष्यति .... ।

त्वं धाविष्यति .... ।

दिनाङ्क : .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १०

शब्दावली—नदी—नदी, river, रजनी—रात्रि, night, सखी—सहेली, friend, भवती—आप (स्त्रीलिंग), you, राज्ञी—रानी, queen, बुद्धिमती—बुद्धिमान् स्त्री, an intelligent woman, दा—देना, to give, यच्छ्—देना, to give, नमः—नमस्कार, salutation, स्वस्ति—आशीर्वाद, blessing.

नियम १८—(चतुर्थी) संप्रदान कारक (दान देना आदि) में चतुर्थी होती है । ब्राह्मणाय धनं ददाति यच्छति वा—ब्राह्मण को धन देता है । बालकाय पुस्तकं ददाति—बालक को पुस्तक देता है ।

नियम १९—(चतुर्थी) नमः और स्वस्ति के साथ चतुर्थी होती है । गुरवे नमः—गुरु को नमस्कार । शिष्याय स्वस्ति—शिष्य का कल्याण हो ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

नदीं पश्य । नद्याः जलम् आनय । रजन्यां चन्द्रः भाति (चमकता है) । राज्ञी भवत्यै फलानि यच्छति । बुद्धिमत्यै नमः । सखीं पृच्छ । पुत्राय स्वस्ति । अहं भवतीं पृच्छामि । बालकेभ्यः फलानि यच्छ । बालकाः हसन्ति । बालिकाः अहसन् । ते हसिष्यन्ति ।

हिन्दी में अर्थ लिखो :—

नृपः ब्राह्मणाय धनं यच्छति ....

गुरवे नमः, शिष्याय स्वस्ति ....

रजन्यां चन्द्रः भाति ....

नद्याः जलम् आनय ....

राज्ञी बुद्धिमत्यै फलानि ददाति ....

(क) संस्कृत बनाओ :—

वह नदी को देखता है..

वह नदी से जल लाया..

नदी में जल है..

रात्रि में चन्द्रमा आकाश में चमकता है..

सखी आपको पुस्तकें देती है..

राम हरि को धन देता है..

रानी से पूछो..

गुरु को नमस्कार..

शिष्य को आशीर्वाद..

बालक हँसा..

शिशु हँसेंगे..

तू हँस..

मैं नहीं हँसूँगा..

बुद्धमती को फल दो..

(ख) रिक्त स्थानों में हस् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप लिखो :—

बालकाः..

त्वं..

यूयं..

अहं..

वयं..

दिनाङ्कः.. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..

अभ्यास ११

शब्दावली—अध्यापकः—अध्यापक, teacher, अङ्काः—अंक, marks, अवकाशः—छुट्टी, holiday, उत्तीर्णः—उत्तीर्ण, passed, अनुत्तीर्णः, failed, उपस्थितः—उपस्थित, present, अनुपस्थितः—अनुपस्थित, absent, परीक्षा—परीक्षा, examination, श्रेणी—कक्षा, class, युष्मद्—तू, you, रुच्—अच्छा लगना, to like, क्रुध्—क्रोध करना, to be angry, द्रुह्—द्रोह करना, to bear malice.

नियम २०—(चतुर्थी) रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है । जैसे—बालकाय मोदकं रोचते—बालक को लड्डू अच्छा लगता है । पुत्राय दुग्धं रोचते ।

नियम २१—(चतुर्थी) क्रुध् और द्रुह् अर्थ की धातुओं के साथ जिसपर क्रोध किया जाय, उसमें चतुर्थी होती है । जैसे—रामः दुर्जनाय क्रुध्यति, दुह्यति वा—राम दुर्जन पर क्रोध करता है ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

अयं विद्यालयः अस्ति । अत्र अध्यापकाः छात्रान् पाठयन्ति (पढ़ाते हैं) । अद्य विद्यालये शतं छात्राः उपस्थिताः सन्ति, दश च अनुपस्थिताः । परीक्षायां सप्ततिः (७०) छात्राः उत्तीर्णाः, अन्ये च अनुत्तीर्णाः । शिष्याय मोदकं रोचते ।

युष्मद् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

.... प्र० .... द्वि०

.... तृ च०

.... ष० .... स०

(क) संस्कृत बनाओ :—

यह एक विद्यालय है ....

विद्यालय में सौ छात्र पढ़ते हैं ....

अध्यापक कक्षा में शिष्यों को पढ़ाते हैं ....

मैं उपस्थित हूँ ....

आज श्याम अनुपस्थित है ....

आज तुम्हारी परीक्षा है ....

वार्षिक परीक्षा में ७० छात्र उत्तीर्ण हैं ....

अन्य छात्र अनुत्तीर्ण हैं ....

कृष्ण को लड्डू अच्छा लगता है ....

शिशु को दूध अच्छा लगता है ....

तुम्हें क्या अच्छा लगता है ? ....

राम रावण पर क्रोध करता है ....

आज विद्यालय में छुट्टी है ....

तुम्हारी श्रेणी में कितने (कति) छात्र हैं ? ....

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखो :—

तुभ्यं किं रोचते ? मह्यं ....

रामः कस्मै क्रुध्यति ? ....

तव पुस्तकं कुत्र अस्ति ? मम ....

शिशवे किं रोचते ? ....

त्वं किं पठिष्यसि ? ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १२

शब्दावली—अस्मद्—मैं, I. अश्व—घोड़ा, horse, चोर—चोर, thief, पत्—गिरना, to fall. बिभेति—डरता है, fears, त्रायते—बचाता है, protects, संचिका—कापी, exercise-book, मसी—स्याही, ink. मसीपात्रम्—दावात, inkpot, लेखनी—कलम, pen, तूलिका—पेन्सिल, pencil. ह्यः—बीता हुआ कल, yesterday, श्वः—आनेवाला कल, tommorow.

नियम २२—(पंचमी) अपादान कारक मे पंचमी होती है । वृक्षात् पत्रं पतति—पेड़ से पत्ता गिरता है । अश्वात् बालः पतति—बालक घोड़े से गिरता है ।

नियम २३—(पंचमी) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है । चोरात् बिभेति—चोर से डरता है । चोरात् त्रायते—चोर से बचाता है ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

नरः अश्वात् पतति । बालः चोरात् बिभेति । नृपः बालं चोरात् त्रायते । श्वः मम परीक्षा अस्ति । मम समीपे संचिका मसी मसीपात्रं लेखनी तूलिका च सन्ति । अहं परीक्षायां सफलः भविष्यामि । अहं ह्यः ग्रामम् अगच्छम् ।

अस्मद् शब्द के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....प्र० ....द्वि०

....तृ० ....च०

....ष० ....स०

(क) संस्कृत बनाओ :—

मैं लेख लिखता हूँ..

तुम लेख लिखो..

राम ने लेख लिखा..

बालिकाएँ लेख लिखेंगी..

मेरे साथ एक छात्र है..

मुझे लड्डू अच्छा लगता है..

मेरा नाम रामदत्त है..

बालक घोड़े से गिरा..

पेड़ से पत्ता गिरा..

शिशु चोर से डरता है..

सज्जन शिशु को चोर से बचाता है..

मेरे पास कापी पेन्सिल और कलम हैं..

मेरी दावात में स्याही है..

कल मेरी मौखिक (मौखिकी) परीक्षा होगी..

राम कल घर गया था..

(ख) नीचे लिख् धातु के लट्, लङ्, विधिलिङ् के रूप लिखो :—

बालकाः लेखं..

त्वं लेखं..

यूयं लेखं..

अहं लेखं..

दिनाङ्कः.. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..

अभ्यास १३

शब्दावली—क्षेत्रपालकः—खेत का रक्षक, one who guards a field. यवः—जौ, barley, भवनम्—घर, mansion, द्वारम्—दरवाजा, gate, कपाटः—किवाड़, door, शय्या—बिस्तर, bed, पाकशाला—रसोई, kitchen, अधीते—पढ़ता है, learns, वारयति—हटाता है, prevents. निवारयति—हटाता है, prevents.

नियम २४—(पंचमी) जिससे विद्या पढ़ी जाय, उसमें पंचमी होती है । जैसे—गुरोः पठति । उपाध्यायात् अधीते ।

नियम २५—(पंचमी) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाय, उसमें पंचमी होती है । क्षेत्रपालकः यवेभ्यः पशुं वारयति—क्षेत्रपाल जौ से पशु को हटाता है ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

रामः गुरोः विद्याम् अधीते । पिता पुत्रं पापात् निवारयति । गुरुः शिष्यं दुर्गुणात् वारयति । तत् रामस्य भवनम् अस्ति । तस्मिन् भवने एकं द्वारं द्वौ कपाटौ च सन्ति । अहं शय्यायां शयनं करोमि । मम माता पाकशालायां भोजनं पचति (पकाती है) ।

तत् शब्द पुं० के इन विभक्तियों के रूप लिखो :—

....द्वि० ....तृ०

....च० ....पं०

....ष० ....स०

(क) संस्कृत बनाओ :—

वे घर गये ……………………

मैं कल घर जाऊँगा ……………………

तुम कल कहाँ गये थे ? ……………………

मैं कल प्रयाग गया था ……………………

उसको फल दो ……………………

वे बालिकाएँ हँस रही हैं ……………………

कृष्ण गुरु से विद्या पढ़ता है ……………………

गुरु से विद्या पढ़ो ……………………

राम जौ से पशु को हटाता है ……………………

गुरु शिष्य को पाप से हटाता है ……………………

मेरे घर में रसोई है ……………………

दरवाजे में दो किवाड़ हैं ……………………

हम बिस्तर पर सोते हैं ……………………

पिता पुत्र को दुर्गुण से हटाता है ……………………

(ख) इन वाक्यों का अर्थ लिखकर अन्तर समझाओ :—

सः पठति …………… । सा पठति ……………

तौ पठतः …………… । ते पठतः ……………

ते पठन्ति …………… । ताः पठन्ति ……………

ते लिखन्ति …………… । ताः लिखन्ति ……………

ते पतन्ति …………… । ताः पतन्ति ……………

दिनाङ्कः …………… हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ……………

अभ्यास १४

शब्दावली—शरीरम्—शरीर, body, शिरः—सिर, head, केशाः—बाल, hair, नेत्रे—दो आँख, eyes, मुखम्—मुँह, mouth, उदरम्—पेट,. stomach, जिह्वा—जीभ, tongue, कर्णौ—दो कान, ears, दन्ताः—दाँत teeth, भुजौ—दो भुजाएँ, arms, हस्तौ—दो हाथ, hands, अङ्गुलयः—अँगुलियाँ, fingers, पादौ—दो पैर, feet, स्मृ—स्मरण करना, to remember, to learn.

नियम २६—(षष्ठी) सम्बन्धकारक के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है । जैसे—रामस्य पुस्तकम्—राम की पुस्तक । देवदत्तस्य गृहम् । गङ्गायाः जलम् । वृक्षस्य पत्रम् ।

नियम २७—(षष्ठी) स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ (खेदपूर्वक स्मरण में) कर्म में षष्ठी होती है । शिशुः मातुः स्मरति—बच्चा खेदपूर्वक माता को स्मरण करता है ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

इदं मम शरीरम् अस्ति । मम शिरसि (सिर पर) केशाः सन्ति । मम द्वे नेत्रे स्तः । अहं नेत्राभ्यां पश्यामि । अहं मुखेन वदामि, भोजनं च करोमि । मम मुखे जिह्वा दन्ताः च सन्ति । मम द्वौ कर्णौ स्तः । अहं कर्णाभ्यां शृणोमि (सुनता हूँ) । मम द्वौ भुजौ द्वौ हस्तौ च सन्ति । हस्तेषु अङ्गुलयः सन्ति । मम द्वौ पादौ स्तः ।

इदम् शब्द पुं० के इन विभक्तियों में रूप लिखो :—

.... **प्र०** .... **द्वि०**

.... **तृ०** **च०**

.... **ष०** **स०**

(क) संस्कृत बनाओ :—

यह कौन है ? ....

यह एक बालक है ....

यह एक बालिका है ....

यह एक फल है ....

यह राम की पुस्तक है ....

यह कृष्ण का घर है ....

यह गंगा का जल है ....

यह पेड़ का पत्ता है ....

बच्चा माता को स्मरण करता है ....

यह मेरा हाथ है ....

रमा के सिर पर बाल हैं ....

इस बालक की दो आंखें हैं ....

वह दो आखों से देखता है ....

तेरे दो कान हैं ....

मैं कानों से शब्द सुनता हूँ ....

(ख) इन वाक्यों को शुद्ध करो :—

ते पश्यति ....। अहं पश्यामः ....

त्वं पश्यतु ....। यूयं पश्य ....

अहम् अपश्यत् ....। वयं अपश्यम् ....

ते पश्येत् ....। अहं पश्येम ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १५

शब्दावली—कञ्चुकः—कुर्ता, shirt, अधोवस्त्रम्—धोती, dhoti, शाटिका—साड़ी, saree, अङ्गप्रोक्षणम्—अँगोछा, towel, मुखप्रोक्षणम्—रूमाल, handkerchief, पादयाम.—पायजामा, trousers. उपानह्, उपानत्—जूता,' shoe, उपरि—ऊपर, on, नीचैः—नीचे, below, अग्रे—सामने, infront of, श्रेष्ठः—श्रेष्ठ, best, पटुतमः—सबसे चतुर, most intelligent. धारय—पहनना, to wear, मार्जय—पोंछना, to wash off.

नियम २८—(षष्ठी) बहुतों में से एक को छांटने में, जिसमें से छाँटा जाय, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं । जैसे—छात्राणां छात्रेषु वा रामः श्रेष्ठः—छात्रों में राम श्रेष्ठ है । छात्रासु उमा पटुतमा—छात्राओं में उमा सबसे चतुर है ।

नियम २९—(षष्ठी) उपरि, नीचैः और अग्रे के साथ षष्ठी होती है । जैसे—वृक्षस्य उपरि, नीचैः, अग्रे वा खगाः सन्ति—पेड़ के ऊपर, नीचे या सामने पक्षी हैं ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

रामः जलं पिबति । श्यामः दुग्धम् अपिबत् । त्वं दुग्धं पिब । अहं कञ्चुकम् अधोवस्त्रम् उपानत् च प्रतिदिनं धारयामि । सः अङ्गप्रोक्षणेन शरीरं, मुखप्रोक्षणेन च मुखं मार्जयति । त्वं पादयामं धारयसि । सा स्त्री शाटिकां धारयति । गृहस्य उपरि नीचैः च जनाः सन्ति । कालिदासः कवीनां कविषु वा श्रेष्ठः अस्ति । कृष्णः छात्राणां पटुतमः अस्ति ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

कृष्ण दूध पीता है ....

राम ने जल पिया ....

मैं जल पीऊँगा ....

तुम जल पीओ ....

वह कुर्ता और धोती पहनता है ....

तू रूमाल से मुँह पोंछता है ....

मैं अँगोछे से शरीर पोंछता हूँ ....

क्या वह लड़की साड़ी पहनती है ? ....

तुम जूता क्यों नहीं पहनते हो ? ....

पेड़ के नीचे बालक खेल रहे हैं ....

छात्राओं में रमा सबसे चतुर है ....

सारे कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं ....

(ख) रिक्त स्थानों को भरो :—

त्वं पादयामं .... । अहं .... मार्जयामि ।

श्यामः .... पटुतमः । .... उपरि .... सन्ति ।

कवीनां .... श्रेष्ठः । अहं .... पास्यामि ।

(ग) पा (पीना) धातु के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

पिबतु .... प्र० अपिबत् ....

.... म० ....

.... उ० ....

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १६

शब्दावली—क्रीडाक्षेत्रम्—खेल का मैदान, play-ground, क्रीडकः—खिलाड़ी, player, पादकन्दुकः—फुटबॉल, foot-ball, आसन्दिका—कुर्सी, chair, फलकम्—मेज, table, लेखनपीठम्—डेस्क, desk, काष्ठासनम्—बेंच, bench, स्नेहः—प्रेम, affection, आदरः—आदर, respect, निवस्—रहना, to dwell, इच्छ्—चाहना, to like, to desire.

नियम ३०—(सप्तमी) अधिकरण कारक में सप्तमी होती है । जैसे—सः विद्यालये पठति—वह विद्यालय में पढ़ता है । सः गृहे निवसति । पाठशालायां शतं छात्राः पठन्ति ।

नियम ३१—(सप्तमी) प्रेम और आदर-सूचक शब्दों और धातुओं के साथ सप्तमी होती है । तस्य रामे स्नेहः अस्ति—उसका राम पर प्रेम है । मम गुरौ आदरः श्रद्धा वा अस्ति ।

नियम ३२ —(तुमुन्) को, के लिए अर्थ में धातु से तुम् प्रत्यय होता है । इसके रूप नहीं चलते हैं। कृ>कर्तुम्—करने को । पठ्>पठितुम्—पढ़ने को । लिख्>लेखितुम्—लिखने को । गम्>गन्तुम्—जाने को । पा>पातुम्—पीने को । खाद्>खादितुम्—खाने को । दा>दातुम्—देने को । दृश्>द्रष्टुम्—देखने को ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

इदं क्रीडाक्षेत्रम् अस्ति । क्रीडाक्षेत्रे क्रीडकाः पादकन्दुकेन क्रीडन्ति । गुरुः आसन्दिकायाम् उपविशति, छात्राः च काष्ठासने उपविशन्ति । फलके गुरोः पुस्तकानि सन्ति । लेखनपीठे छात्राणां पुस्तकानि सन्ति । अहं छात्रालये निवसामि । गुरोः शिष्ये स्नेहः अस्ति । सः पठितुम् इच्छति । अहं गन्तुम् इच्छामि । स जलं पातुम् इच्छति । अहं भोजनं खादितुं गच्छामि ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

विद्यालय में एक खेल का मैदान है ....

यहाँ पर बालक फुटबाल खेल रहे हैं ....

खिलाड़ी गेंद से खेल रहा है ....

राम कुर्सी पर बैठा है ....

मेज पर दस पुस्तकें हैं ....

डेस्क पर कृष्ण की दावात है ....

बेंच पर बालक बैठे हैं ....

पिता का पुत्र पर स्नेह है ....

शिष्य की गुरु पर श्रद्धा है ....

राम पढ़ने को विद्यालय जाता है ....

वह जाना चाहता है ....

मैं जल पीना चाहता हूँ ....

मैं भोजन खाने को घर जाता हूँ ....

(ख) कोष्ठ में दिये शब्दों में से उचित शब्द चुनकर भरो :—

अहं कार्यं .... इच्छामि ।	(दातुम्, कर्तुम्, पातुम्)
त्वं बालिकां .... इच्छसि ।	(द्रष्टुम्, गन्तुम्, कर्तुम्)
बालकः क्रीडाक्षेत्रे .... ।	(अक्रीडत्, अगच्छन्, अक्रीडः)
ते क्रीडाक्षेत्रे .... ।	(पठेयुः, क्रीडेयुः, गच्छेत्)
बालिकाः .... ।	(क्रीडिष्यन्ति, क्रीडति, क्रीडेत्)
वयं कन्दुकेन .... ।	(क्रीडन्ति, क्रीडामः, अक्रीडन्)

दिनाङ्कः .... हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १७

शब्दावली—रोटिका—रोटी, bread, पाचकः—रसोइया, cook, मोदकः—लड्डू, a kind of sweet, सूपः—दाल, soup, शाकः—साग, vegetable, सिता—चीनी, sugar, भक्तम्—भात, boiled rice, मिष्टान्नम्—मिठाई, sweets, नवनीतम्—मक्खन, butter, घृतम्—घी, ghee, लवणम्—नमक, salt, संलग्नः—लगा हुआ, engaged, चतुरः—चतुर, skilful.

नियम ३३—(सप्तमी) संलग्न और चतुर अर्थ वाले शब्दों के साथ सप्तमी होती है । स पठने संलग्नः लग्नः युक्तः तत्परः वा अस्ति—वह पढ़ाई में लगा हुआ है । स पठने कुशलः निपुणः दक्षः चतुरः वा अस्ति—वह पढ़ाई में चतुर है ।

नियम ३४—(तव्य) 'चाहिए' अर्थ में धातु के साथ तव्य प्रत्यय लगता है । जैसे—कृ + तव्य = कर्तव्यम् । इसी प्रकार पठितव्यम्, लेखितव्यम्, गन्तव्यम्, खादितव्यम्, पातव्यम् ।

इन वाक्यों के ध्यान से पढ़ो :—

पाचकः रोटिकां सूपं शाकं च पचति । अहं मोदकं मिष्टान्नं नवनीतं च प्रतिदिनं खादामि । त्वं भक्तं घृतं सितां च खादसि । सूपे लवणं न्यूनम् अस्ति । मया कार्यं कर्तव्यम् । त्वया पुस्तकं पठितव्यम्, लेखः च लेखितव्यः । मया जलं पातव्यम् ।

खाद् धातु के लोट् और लङ् के रूप लिखो :—

खादतु	प्र०	अखादत् ....
....	म०	....
....	उ०	....

(क) संस्कृत बनाओ :—

मैं रोटी खाता हूँ..

राम मिठाई खायेगा ....

तुम क्या खाओगे ? ....

मैं लड्डू खाऊँगा ....

वह क्या खायेगा ? ....

वह भात, दाल और रोटी खायेगा ....

दूध में चीनी है ....

दाल में नमक और घी है ....

रसोइया क्या पका रहा है ? ....

वह दाल और साग पका रहा है ....

मैं मक्खन से रोटी खाता हूँ ....

मैं पढ़ाई में लगा हुआ हूँ ....

तुम पढ़ाई में चतुर हो ....

तुम्हें काम करना चाहिए ....

मुझे दूध पीना चाहिए ....

मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए ....

(ख) इन वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :—

अहं कार्यं कर्तव्यम् ....

त्वया पुस्तकः पठितव्यः ....

अहं जलं पातव्यम् ....

सूपे लवणं न सन्ति ....

दिनाङ्कः.. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास १८

शब्दावली—प्रथमः—पहला, first, द्वितीयः—दूसरा, second, तृतीयः—तीसरा, third, चतुर्थः—चौथा, fourth, पञ्चमः—पाँचवाँ, fifth, षष्ठः—छठा, sixth, सप्तमः—सातवाँ, seventh, अष्टमः—आठवाँ, eighth, नवमः—नवाँ, ninth, दशमः—दसवाँ, tenth, बाणः—बाण, arrow, क्षिप्—फेंकना, to throw, मुञ्च्-छोड़ना, to throw, विश्वसिति—विश्वास करता है, believes.

नियम ३५—(सप्तमी) फेंकना और विश्वास अर्थवाली धातुओं और शब्दों के साथ सप्तमी होती है । जैसे—मृगे बाणं क्षिपति मुञ्चति वा—मृग पर बाण फेंकता है । स धर्मे विश्वसिति—वह धर्म में विश्वास करता है । विश्वस् के साथ द्वितीया भी होती है ।

नियम ३६—(शतृ) 'रहा है', 'रहा था' आदि अर्थ को बताने के लिए शतृ प्रत्यय होता है । इसका अत् शेष रहता है । जैसे पठ्>पठत्—पढ़ता हुआ । लिख्>लिखत्—लिखता हुआ । गम्>गच्छत्—जाता हुआ । कृ>कुर्वत्—करता हुआ ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

अहं कक्षायां प्रथमः अस्मि, त्वं द्वितीयः असि, स च तृतीयः अस्ति । कक्षायां रामः चतुर्थः, कृष्णः पञ्चमः, देवदत्तः षष्ठः, यज्ञदत्तः सप्तमः, श्यामः अष्टमः, हरिः नवमः, विष्णुः दशमः च सन्ति । गच्छन्तं (जाते हुए) सिंहं पश्य । त्वं किं वदसि ? अहं सत्यं वदामि । त्वं सदा सत्यं वद ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

राम मृग पर बाण फेंकता है..

कृष्ण सिंह पर बाण फेंकता है..

वह राम पर विश्वास करता है..

आते हुए शेर को देखो..

जाते हुए बालक को देखो..

वह सत्य बोलता है..

तू सदा सत्य बोल..

कृष्ण क्या कहता है ?..

हम सच बोलते हैं..

राम कक्षा में प्रथम है..

कृष्ण कक्षा में द्वितीय है..

देवदत्त कक्षा में तृतीय है..

तुम्हारी कक्षा में सातवाँ छात्र कौन है ?..

हमारी कक्षा में सातवाँ छात्र हरि है..

(ख) रिक्त स्थानों को भरो:—

गच्छन्तं......................पश्य । आगच्छन्तं......................पश्य ।

कक्षायां द्वितीयः कः............? मम कक्षायां तृतीयः.....अस्ति ।

त्वं किं......................(वद्) ? अहं......................वदामि ।

कदापि असत्यं न............... । सदा सत्यं...................... ।

दिनाङ्कः.............................. ....हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..............................

अभ्यास १६.

शब्दावली—किम्—क्या, what. कस्मिन्—किसमें, in which, पितुः—पिता का, father's, राजकीयः—सरकारी, Government.

कृ धातु—लोट्				**लङ्**		
करोतु	कुरुताम्	कर्वन्तु	प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
कुरु	कुरुतम्	कुरुत	म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
करवाणि	करवाव	करवाम	उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ्				**लृट्**		
कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
कुर्याम्	कर्याव	कुर्याम	उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

नियम ३७—(क्त प्रत्यय) भूतकाल अर्थ में धातुओं से क्त प्रत्यय होता है । इसका त शेष रहता है ! इससे पहले कुछ धातुओं में इ और लगता है, कुछ में नहीं । जैसे- -कृ-कृतः (किया), पठ्-पठितः (पढ़ा), लिख्—लिखितः (लिखा), गम्-गतः (गया) ।

नियम ३८—(दीर्घ संधि) अ इ उ ऋ के बाद वैसा ही अक्षर बाद में होगा, तो दोनों अक्षरों के स्थान पर उसी वर्ण का दीर्घ अक्षर हो जायगा । विद्या+आलयः=विद्यालयः । गिरि+ईशः= गिरीशः । गुरु+उपदेशः=गुरूपदेशः ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

तव किं नाम अस्ति ? मम नाम रामः अस्ति । तव पितुः किं नाम अस्ति ? मम पितुः नाम कृष्णचन्द्रः अस्ति । त्वं कस्मिन् विद्यालये पठसि ? अहं राजकीये विद्यालये पठामि । त्वं कस्मिन् नगरे वससि ? अहं प्रयाग-नगरे वसामि ।

(क) संस्कृत बनाओ :—(रिक्त स्थानों की उचित पूर्ति करो)

तुम्हारा क्या नाम है ? ....

मेरा नाम..............है ....

तुम्हारे पिता का क्या नाभ है ? ....

मेरे पिता का नाम...................है ....

तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो ? ....

मैं.....................विद्यालय में पढ़ता हूँ...............................

तुम किस नगर में रहते हो ? ....

मैं..............नगर में रहता हूँ...

तुम्हारे कितने भाई हैं ?.................कति भ्रातर: ....

मेरे...............भाई हैं ....

तुम्हारे पिता क्या काम करते हैं ? ....

मेरे पिता............का काम करते है ....

तुम क्या कर रहे हो ? ....

मैं अध्ययन कर रहा हूँ..

तुम कहां जा रहे हो ?..

मैं घर जा रहा हूँ ....

तुम कब आओगे ? ....

मैं कल प्रात:काल आऊँगा ....

तुम कहाँ से आ रहे हो ?...

मैं विद्यालय से आ रहा हूँ ....

दिनाङ्क:.. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य ....

अभ्यास २०

शब्दावली—पिता—पिता, father, भ्राता—भाई, brother, माता—माता, mother, भगिनी—बहिन, sister. पितृव्य—चाचा, uncle, मातुलः—मामा, maternal uncle, पितामह—बाबा, grand-father, मातामहः—नाना, maternal grand-father.

अस् धातु— लोट्				लङ्		
अस्तु	स्ताम्	सन्तु	प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
एधि	स्तम्	स्त	म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
असानि	असाव	असाम	उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्				लृट्		
स्यात्	स्याताम्	स्युः	प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
स्याः	स्यातम्	स्यात	म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
स्याम्	स्याव	स्याम	उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

नियम ३९—(क्त्वा) कर या करके अर्थ में त्वा प्रत्यय होता है । इसके रूप नहीं चलते हैं। जैसे—पठ्>पठित्वा-पढ़कर, लिख्>लिखित्वा—लिखकर, गम्>गत्वा—जाकर, खाद्>खादित्वा—खाकर, कृ>कृत्वा—करके, दृश्>दृष्ट्वा—देखकर ।

नियम ४०—(गुण-संधि) अ या आ के बाद इ या ई होंगे तो दोनों को ए हो जायगा, उ या ऊ को ओ और ऋ को अर् हो जायगा । रमा+ईशः=रमेशः । हित+उपदेशः=हितोपदेशः । महा+ऋषिः=महर्षिः ।

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :—

मम पिता माता च अत्रैव निवसतः । मम एका भगिनी, एकः पितृव्यः, एकः मातुलः च सन्ति । अहं पाठं पठित्वा, लेखं लिखित्वा, भोजनं च खादित्वा विद्यालयं गच्छामि ।

(क) संस्कृत बनाओ :—

मेरे पिता यहाँ रहते हैं...

मेरी माता घर में है...

मेरी बहिन पढ़ने जाती है...

मेरे चाचा व्यापार करते हैं...

मेरे मामा कृषि करते हैं...

मेरे बाबा और नाना वृद्ध हैं...

वह पुस्तक पढ़कर विद्यालय जाता है...

वह खाना खाकर यहाँ आया...

वह फूल को देखकर हँसा...

राम काम करके घर गया...

वह लेख लिखकर सोया (सुप्तः)...

राम यहाँ पर था...

तुम कहाँ थे ?...

मैं यहाँ पर ही था...

राम अब कहाँ होगा ?...

(ख) कोष्ठ में दिये शब्दों में से उचित शब्द चुनकर भरो :—

अहम् इदं कार्यं .... । (करिष्यामि, करिष्यति)

अहम् अत्र एव .... । (आसम्, आसीत्)

त्वम् इदं कार्यं .... । (कुर्याः, कुर्याम्)

वयं तत्र .... । (भविष्यामि, भविष्यामः)

दिनाङ्कः.................................. हस्ताक्षरम् उपाध्यायस्य..................................

परिशिष्ट

(क) शब्दरूप-संग्रह

(१) राम (राम) अकारान्त पुं०

प्र०	रामः	रामौ	रामाः
द्वि०	रामम्	रामौ	रामान्
तृ०	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
च०	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पं०	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
ष०	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
स०	रामे	रामयोः	रामेषु
सं०	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

(२) हरि (विष्णु) इकारान्त पुं०

प्र०	हरिः	हरी	हरयः
द्वि०	हरिम्	हरी	हरीन्
तृ०	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
च०	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पं०	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
ष०	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
स०	हरौ	हर्योः	हरिषु
सं०	हे हरे	हे हरी	हे हरयः

(३) गुरु (गुरु) उकारान्त पुं०

प्र०	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वि०	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृ०	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
च०	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पं०	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
ष०	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
स०	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सं०	हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

(४) रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्री०

प्र०	रमा	रमे	रमाः
द्वि०	रमाम्	रमे	रमाः
तृ०	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
च०	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पं०	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
ष०	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
स०	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सं०	हे रमे	हे रमे	हे रमाः

(५) नदी (नदी) ईकारान्त स्त्री०

प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

(६) गृह (घर) अकारान्त नपुं०

प्र०	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वि०	गृहम्	गृहे	गृहाणि
तृ०	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
च०	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
पं०	गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
ष०	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
स०	गृहे	गृहयोः	गृहेषु
सं०	हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि

(७) युष्मद् (तू)

त्वम्	युवाम्	यूयम्	प्र०
त्वाम्	युवाम्	युष्मान्	द्वि०
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृ०
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्	च०
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	पं०
तव	युवयोः	युष्माकम्	ष०
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	स०

(८) अस्मद् (मैं)

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम	आवयोः	अस्माकम्
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

(९) तत् (वह) पुंलिंग

सः	तौ	ते	प्र०
तम्	तौ	तान्	द्वि०
तेन	ताभ्याम्	तैः	तृ०
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	च०
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	पं०
तस्य	तयोः	तेषाम्	ष०
तस्मिन्	तयोः	तेषु	स०

(१०) इदम् (यह) पुंलिंग

प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्	इमौ	इमान्
तृ०	अनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
ष०	अस्य	अनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	अनयोः	एषु

तत्—नपुं०

तत्	ते	तानि	प्र०
तत्	ते	तानि	द्वि०

शेष पुंलिंग के तुल्य

इदम्—नपुं०

प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्	इमे	इमानि

शेष पुंलिंग के तुल्य

तत्—स्त्रीलिंग

सा	ते	ताः	प्र०
ताम्	ते	ताः	द्वि०
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृ०
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	च०
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	पं०
तस्याः	तयोः	तासाम्	ष०
तस्याम्	तयोः	तासु	स०

इदम्—स्त्रीलिंग

प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्	इमे	इमाः
तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
ष०	अस्याः	अनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	अनयोः	आसु

(ख) धातुरूप-संग्रह

पठ् (पढ़ना)

लट्				लोट्		
पठति	पठतः	पठन्ति	प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
पठसि	पठथः	पठथ	म० पु०	पठ	पठतम्	पठत
पठामि	पठावः	पठामः	उ० पु०	पठानि	पठाव	पठाम

लङ्				विधिलिङ्		
अपठत्	अपठताम्	अपठन्	प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
अपठः	अपठतम्	अपठत	म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
अपठम्	अपठाव	अपठाम	उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट्

पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति	प्र० पु०
पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ	म० पु०
पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः	उ० पु०

सूचना—निम्नलिखित धातुओं के रूप भू या पठ् के तुल्य चलावे । यहाँ पर पांचों लकारों के केवल प्रारम्भिक रूप (प्र० पु० एक०) दिये गये हैं ।

	धातु	लट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्	लृट्
१.	लिख्	लिखति	लिखतु	अलिखत्	लिखेत्	लेखिष्यति
२.	गम्	गच्छति	गच्छतु	अगच्छत्	गच्छेत्	गमिष्यति
३.	दृश्	पश्यति	पश्यतु	अपश्यत्	पश्येत्	द्रक्ष्यति.
४.	पा	पिबति	पिबतु	अपिबत्	पिबेत्	पास्यति
५.	क्रीड्	क्रीडति	क्रीडतु	अक्रीडत्	क्रीडेत्	क्रीडिष्यति
६.	खाद्	खादति	खादतु	अखादत्	खादेत्	खादिष्यति
७.	वद्	वदति	वदतु	अवदत्	वदेत्	वदिष्यति
८.	पत्	पतति	पततु	अपतत्	पतेत्	पतिष्यति
९.	प्रच्छ्	पृच्छति	पृच्छतु	अपृच्छत्	पृच्छेत्	प्रक्ष्यति
१०.	स्था	तिष्ठति	तिष्ठतु	अतिष्ठत्	तिष्ठेत्	स्थास्यति
११.	हस्	हसति	हसतु	अहसत्	हसेत्	हसिष्यति
१२.	चल्	चलति	चलतु	अचलत्	चलेत्	चलिष्यति